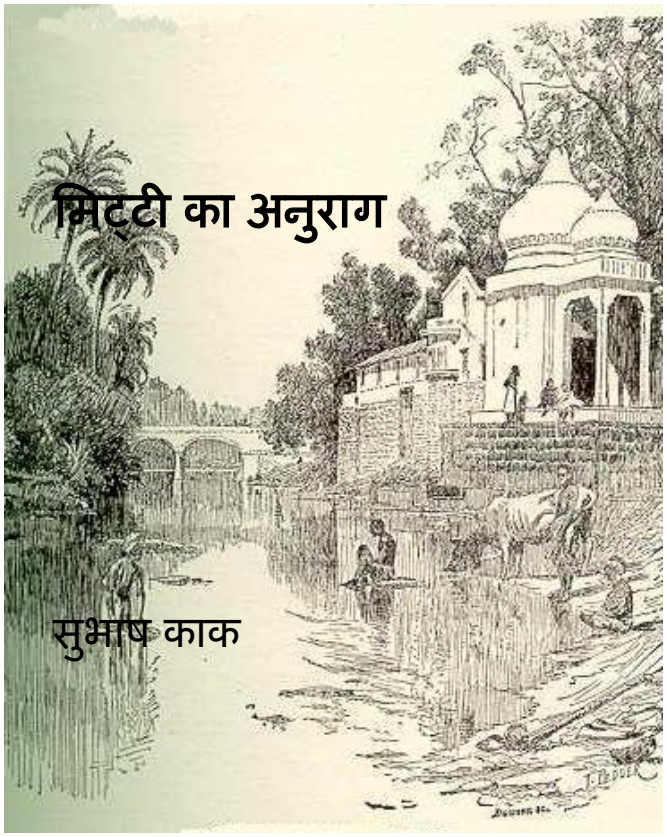

यह संस्करण अलकनन्दा प्रकाशन, देहरादून, भारत से प्रकाशित हुआ।

© सुभाष काक, 2007

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्राग्वाच

इस कविता संग्रह में पुरानी और नई दोनों कविताएं हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सूची

1. अंगारों का रास्ता 9
2. अनुराग और द्वेष 11
3. अश्वताल 13
4. इतिहास पुराण 15
5. एक और युद्ध 17
6. पत्ते और भाव 18
7. प्रेम का संकेत 20
8. पशु विदाई 21
9. रंग अँधेरे में 23
10. श्वेत फूल 25
11.एक सहेली 26
12. ग्रहण 27
13. चन्द्रमा 28
14. जंगल में आग 29
15. नगर 31
16. नयनों का कोना 32
17. संवाद 33
18. सीमा पार 34
19. मृतक नायक 36
20. हिमालय प्रयाण 46
21. धागे 50
22. एक ताल, एक दर्पण 53
23. मन्दिर की सीढियां 66
24. डरा पक्षी 69
25. मिट्टी का अनुराग 71
26. विस्मृति 73
27. सोता चरागाह 76

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अंगारों का रास्ता

आग से आग के वीथि पर
अंगारे बिखरे हैं।
समय थोड़ा है
तलवों के छालों की
पीड़ा से परे हम
भ्रांति की ओर
बढ़ गए।
हम जानते हैं
आकांक्षा है जीवन विधान।
ज्ञानी चुप हैं
और देवता सो रहे
आराधित होने के संतोष में।
दर्शन और मीमांसा
कुछ स्पष्ट नहीं करते
केवल भाव हैं हमारे पास
तो हम क्यों न
ओंठ से ओंठ मिलाएँ।
मृत्यु हर दिन होती है
तो महाप्रयाण का
क्या भय?

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अनुराग और द्वेष

मैं तुमसे अब प्रेम नहीं करता
यह सच है,
भले ही मुझे तुम्हारी याद
आती है।
मुझे तुमसे द्वेष है अब,
यद्यपि यह द्वेष
प्रेम का चिह्न है।
जो मैं तुम्हें
चाहता नहीं,
तुम भी मुझे
भूल गई।
मुझे तुमसे प्रेम था,
और कदाचित
तुम्हें भी कभी
मुझसे प्रेम था।
पर तुमने मेरा नाम
अपने हृदय से
मिटा दिया,
मैं भी दूर देश
तुम्हारा अपवाद
करता हूँ।
परंतु यदि तुम्हारी दृष्टि
वाटिका के दूर कोने में
उस पेड़ पर पहुँचकर
जो मैंने बोया था
स्मृति को जगाए
और तुम मेरा नाम लो
मैं तत्काल चला आऊँगा।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अश्वताल

चिदंबरम का तेज
गर्मी की भाप से
धुँधला गया है।
राख में लिपटे
चूल्हे के अंगारों में
कम जान है।
खिड़की के बाहर
नाले की पुलिया की
नींव टूटी लगती है।

और उसका रास्ता
किस गांव जाता है
अब मुझे ज्ञात नहीं।

नहीं मुझे याद है
कैसे मैं आया
इस महालय में।
वेदना आशा देती है।
संदेश है
आश्विनों के एक
प्राचीन क्रम का।
अश्वताल में शरीर
भिषज को सौंपे
मैं दर्पण में ज्योति को
टिकटिका देख रहा हूँ।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इतिहास पुराण

इतिहास पुराण के भीतर
छिपा है
पुराण इतिहास में।
पुराण वेदना का नामरूप
भीतर का संघर्ष-
जो कर्म नहीं हो पाए
उन पर टीका है,
क्योंकि देवता आलसी हैं।
राक्षसों के पास
वासना है,
प्रेम नहीं
मित्रता नहीं
महत्वाकांक्षा है,
धार्मिक उन्माद है।
वह उपनिवेश
और साम्राज्य
माँगते हैं।
देवता श्रम नहीं करते,
संस्कृति का निर्माण नहीं करते।
अन्याय और अत्याचार
का झंझावात
चेतना को
झकझोरता है।
काली आँधियाँ चलती हैं।
संस्कृति उस को
बाँधने का जाल,
नीलकंठ की तरह
विष पी लेने का
न्याय।
इतिहास को
पुराण के परिवेश में देखिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक और युद्ध

क्योंकि वह रक्षा न कर सका
युद्ध में पराजय हुआ
प्रेमिका के हृदय में
वह अब अपमान पात्र है।
जो पुरानी स्मृतियाँ थीं उनकी
पेड़ के नीचे बातें
उद्यान में टहलना
पर्वत के छोटे पथ पर
घोडों पर भ्रमण
अब वह झूठ हैं।
वह झूठ था।
प्रेमी को
धिक्कार रही है वह।
क्या चाहती है,
एक और युद्ध?

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पत्ते और भाव

पेड़ के शब्द पत्ते
और मुस्कान
फूल हैं।
शब्दों से अन्य पेड़
बँधते हैं,
पक्षी और तितलियाँ
सुनती हैं इन्हें।
हमारे भाव
पत्ते हैं
प्रफुल्लित हो जाते हैं कभी।
सिकुड़ते और मुर्झाते भी हैं
चिनार के लाल
पत्तों की तरह।
धरती पर गिरकर
समेटे जाते,
सुलगाकर उनके अंगारों से
गर्मी मिलती है
अंजान लोगों को
ठिठुरती सरदी में।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रेम का संकेत

मेरा तुम्हारे लिए अनुराग
एक वस्तु की इच्छा नहीं
एक छाया को देखने की अभिलाषा है
जो शरीर और आत्मा
के बीच है।
रहस्य का उद्‌घाटन है यह
क्योंकि इसके अंत में
न मैं मैं हूँ
न तुम तुम हो।
जहाँ पहुँचकर यदि तुम द्वार
खटकाओ
मैं न सुन पाऊँगा।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पशु विदाई

पशु की एक दृष्टि
कितना कह सकती है?
जिसके साथी
बीच-बीच में
लुप्त हो जाते हैं
वह क्या सोचता है
जगत का विधान क्या है?
बहुत क्रंदन होता है
बलि के पूर्व
जीवन दान की याचना
विधिवत है।
उस रोने को
हम भूल जाते हैं।
वह भूलना भी
विधिवत है।
पिपासे, व्याकुल प्राणी,
उर्वर समय की प्रतीक्षा
नहीं कर सकते।
इस काल संघात से
इंद्रियाँ जब
दुर्बल होती हैं
तब पशु से विदाई
सह्य हो जाती है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रंग अँधेरे में

क्या वसंत का
नृत्य इतना सुंदर है,
कि तुम इसके रंग
रात में भी
बता सकती हो?
क्या तुम
मिट्टी की गंध
वापस बुला सकते हो?
जंगल में पेड़ों की भास
इतनी मादक है
मुझे भय है
मैं अगला श्वास लेना भूल न जाऊँ।
वसंत के रंग
पहाड़ियों के मध्य
घाटी में फैल गए।
आकाश की तनी हुई चादर
की थरथराहट
से मेरा शरीर काँप उठा।
हृदय जिसने
प्रेम किया है
भूल नहीं सकता।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्वेत फूल

बचपन के आँगन के
श्वेत फूल
मैं भूल गया,
जब से गाँव छोड़ा
वैसे पौधे नहीं देखे।
प्रातः कल
अमेरिका की एक नई बस्ती में
जहाँ मैं खो गया था
गाड़ी की खिड़की से
मैंने वैसे ही
श्वेत फूल
एक घर के पास पाए
एक लड़का उस उद्यान में
खेल रहा था।
जैसे स्वप्न में
डूबा हो।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक सहेली

एक सहेली एक पहेली
शब्द खेल चित्त मेल
प्रश्न स्पर्श विमर्श
बिंब एक स्मृति
प्रतिबिंब एक सीख
तुम जीती मैं हारा
एक वीथी एक सहारा।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्रहण

ग्रहण के छादन में
पक्षी शाखाओं में छिप गए।
मानव चाय के प्याले पीते
चहचहाते रहे
संस्कृति सिखाती है कि
भयानक की चर्चा न हो।
जिस के लिए शब्द न हों उस की स्थिति नहीं।
अबोध बालक ने रिक्त सूर्य को घूरा।
प्रौढ़ काच लेकर उसका प्रतिमान
काग़ज़ पर देखने लगे।
हमने उस में जादू पाया
भय और अंधी आशा।
याद आया
शुक्र का सूर्य में तिरोधन
और उसके पार गमन।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चन्द्रमा

चन्द्रमा को केवल देखिए नहीं
नीचे ले आइए।
इसकी आकृति
अपने साथ रखिए
थैली में,
गोल पैसे की तरह।
इसे काटिए
बाँटिए।
इसे दो बनाकर
आँखों पे रखिए
सुख चैन के लिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जंगल में आग

जंगल के बीच
लहराते वृक्षों को देख
आभास हुआ
हम ही
वह बहती समीर थे।
हम चुप रहे
जब घुडसवार वहाँ पहुँचे
आग लगाने,
एक बस्ती बसाने।
हृदय स्तब्ध था,
क्योंकि हृदय रहस्यपात्र है
इस की भाषा नहीं।
और अरण्य ग्राम के सामने
हटता है।
पक्षी और पतंगें
आग के तूफ़ान में
वृक्षों के तांडवीय नृत्य
में झूल रहे थे,
आहुति बनकर।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नगर

नगर एक कारागार है।
जो धरती पर राज करे
पहले एक माली बने।
मुझे अब याद नहीं
कि मैंने यह पौधे बोए।
पुस्तक जेब में एक उद्यान है।
प्रकृति में प्रत्येक वस्तु
एक जाल में बँधी है।
फूल भी अतिथि से
मिलने को आतुर हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नयनों का कोना

कई स्थान हैं
जहाँ मैं कभी नहीं पहुँचा
जिनकी कल्पना भी नहीं की
पर यह जानता हूँ
एक अनजान स्थान जाना है।
ऐसा एक क्षेत्र
तुम्हारे नयनों का वह कोना है
जहाँ भविष्य के लिए
संकेत हैं।
तुम स्वयं नहीं जानती
इस रहस्य को -
नयनों पर
जो लिखा है,
उसे तुम नहीं
पढ़ सकती।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

संवाद

आकाश और पृथ्वी का संवाद
नैतिक प्रश्नों के परे है।
स्वर्ग और नरक का मेल
पुष्प के खिलने के क्षण
में है आधारित।
स्वर्ग एक फुलवारी
जिस में प्रत्येक पुष्प
प्रफुल्लित है
और एक नए फूल
के लिए स्थान।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सीमा पार

तब समय की एक अलग
धड़कन थी।
पगडंडी पहाड़ के पार
एक घाटी में आई।
झूमते
विशाल वृक्षों के नीचे
जहाँ खुला स्थान था,
और घूमता झरना था।
अब यह नगर है।
विशाल भवनों के मध्य
पर्यटकों के लिए
एक छोटी धारा है।
पर गगनचुंबी महालय
हवा में लहराते नहीं।
स्तब्धता है
समय के ताल में अब
एक व्याकुलता।
मन क्षोभ और भय के बीच
खिंच रहा है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मृतक नायक

१
मैं वह नही जो दीखता हूं
मैं स्वयं ही भूत हूं।

जब मैं निर्जीव हुआ
मेरी आत्मा अस्वीकृत हुई
स्वर्ग और नरक को
लडखडाई वापिस तब
मेरे अस्थिपिञ्जर में।

२
हम सुन्दर हैं कि हम मर जाते हैं
जब समय की उडान रुकी
एक क्षण सहस्र वर्ष हुआ
मैं धूल था, एक विचार था
मेरी चाह थी कि शरीर होऊं
क्योंकि मैंने स्पर्श नही किया
भरपूर नहीं
और जब मेरा जमा हुआ शरीर पिघला
प्राणों की सरसराहट से,
वह आनन्द था।

३
शब्द निःस्तब्धता से निकला
स्वतन्त्रता कारागार हो
पर नीरवता
नीरवता को नहीं भाती
हृदय के कांपने को नहीं भाती

पर सौन्दर्य कौन मांगता है
अतः मुझे गीत गाने दो
मुझे घण्टा बजाने दो।

४
मैं हर दिन मृत्यु को
प्रातराश के दूध की तरह पीता हूं

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस प्रभात को जब मैं जागा
श्वेत धूप के धब्बे मेरे कमरे में थे
मैंने रात के वस्त्र पलंग के आस-पास बिखरा दिये
चौकी पर थाल
सुरुचिपूर्ण संजोए थे
कमरे का उपस्कार
ठीक स्थान पर था
वैसे ही जैसे घर जो रुका हुआ है।

मैं प्रातराश खा न पाया।

७
पक्षी उड गये जब में पहुंचा
मैंने दाना हाथों में बटोरा
मेरा पास चाकू न था
पर पक्षी न आये
मेरे हाथ थक गये और गिरते दानों से
पौधे निकले
और श्वेत फूल
कमल भरपूर।

६

मुझे पीने दो
मुझे और पीने दो
जैसे मैं झुका चीत्कार हुआ
नेत्र उठे एक राक्षस देखा
अर्धनर, अर्धनारी
अपने ही वक्ष को पुचकारता हुआ
मैंने देखा कि नदी का पानी
राक्षस की हचकती छाती के साथ
उठ बैठ रहा,
मेरे हाथ का ताल भिन्न है
मैं केवल झाग उठा पाता हूं।

मुझे पीने दो
तो क्या यदि मांस पिघला है
और मेरे हाथों की अस्थियां

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पकड नहीं पातीं
जो मैं देखता हूं
अन्धेरा है
चिकित्सा प्रयोगशाला में
मानचित्र जैसा हूं,
पर खोखला तो भरने दो।

७

अन्तिम वेनपक्षी
अग्नि की ओर उडा
जलने के लिये
राख में ढलने के लिये
उठने कि लिये
युवा और निष्पाप।

अग्नि के समीप पहुंचा ही था
आंखें बन्द अन्तिम छलांग सोचता
कि किसी ने कठोरता से खींच लिया --
पुनर्जन्म नहीं था यह --
एक व्यक्ति ने गला दबोचा था
दूसरे हाथ में छुरी थी उसके।

झट दो प्रहार से
उसने पंख काट दिये।

अन्तिम वेनपक्षी
अभी वहीं पडा है
अचल, भावशून्य
निर्जीव
पर मृत भी नहीं
प्राण आंखों में हैं
जो धीरे हिल रही हैं
आकाश की परीक्षा कर रही हैं

निकट आग
कब की बुझ गई।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

८

मैं पूरी रात सोता हूं
पर आराम नहीं
पूरे दिन मेरा मन
उदासीन है
और मेरा शरीर
अपरिचित चाह से
अन्धेरे का आकांक्षी है।

कल रात मैंने ठानी
रहस्य को जानने की
घडी का घण्टी लगाई
दो बजे की
जब मैं उठा उस पहर
मैंने देखे पिशाच
मंडराते हुए
रक्त पी रहे।

मेरे हाथ अशक्त थे
सिर में अन्दर
खटखटाहट थी
मैं मूर्च्छित हुआ।

आज मैं उनींदा हूं
अंग पीडित हैं
चाह से
कि अन्धेरा उतर आए।

९ *कीडे*

मैं जंगले पे खडा
अस्थियों को शरद् धूप में गरमा रहा
मेरी पलकों पर सूर्य किरणें
लाखों बारीक गोलों में बिखरीं
और फिर चींटियां चारों ओर रेंगने लगीं।

वह बहती आईं

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मृत्यु की गन्ध जैसी
और कामनाओं को खा गई।

जैसे मैं कार्यालय में बैठा प्रतीक्षित
वेश्या समान, याद कर रहा,
कितने श्मशान घाट मैंने देखे हैं,
कि वह आई।

उसके आग्रह पर
अपनी समझ के विपरीत
मैंने उसे बाहों में समेटा।

जब होंठ होंठ से मिले
वह पृथिवी पर ढेर हुई --
मेरी सांस ने
जान ले ली --
मैं पुनः प्रेम नहीं करूंगा।

(१९७३)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिमालय प्रयाण

याद हैं वह अंगारे
आग बुझने से बचती हुई
वात उछलती हुई जैसे उपेक्षित भूत
तम्बू के हाथी कान थपथपाते हुए
भूले मानचित्र
जल का सरल नाद
तुम और मैं
हमारी घनिष्ठता?

क्या आवारा बेचारा चले
चीड पेडों के बीच से
हमारे पुराने भाई मूर्तिमान
बहुत प्रतीक्षा की इन नें
उनकी याद सो रही है
जब वह जागेंगे
हम सो रहे होंगे,
याद करो।

सुबह जागी है आलसी
अंगों में सुलगती आग
चिडियों का आलाप
घास ओस से नील हुई
पलकें फडफडाईं और मुस्कान
ठंडी हवा बीच उडती आई
चलो टीन गर्माएं
और फिर बाल संवारें।

क्या पर्वत बात करता है?
घुमाऊ पथ पर
खुले स्थान पर
पृथिवी की सूजन दीखती है
टूटी शिला के दान्त
यहां और वहां
और निचली ढाल की घास और चरीले से दूर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर्वत का ध्यानमग्न मुखमण्डल
आंखें बन्द
उदात्त मस्तक, सीधी नाक
और वर्षा के बीच सुन पडता है
इसके वक्ष का धीमा शब्द।

क्या तुमने शरीर दिखाया है
पर्वत नदी को
इसके फेन को चूमा
इससे पीठ को रगडा
और मित्र के साथ मुक्त पाया
इस विशाल स्नानशाला में?
कितनी रुक-रुक के
गर्मी वापस आए
और जब यह फैले
और हम फिर केवल नाम हैं,
समय लौट आया
पर्वत की पट्टी को चढने का।
मेघ के उतरने के बाद
वर्षा का कडक से गिरना
टट्टू काम्प रहे
उनकी उदास विशाल आंखें अन्दर देख रहीं
और एक भूरा चूहा रास्ता सूंघ रहा
अपने जल-भरे बिल की ओर
क्या यह बन्धु पायेगा
या इसे उन्हें ढूंढने
नदी तट जाना होगा?

ऋतु में जादू हैः
जडें पकडे खींच रहीं मिट्टी
जुड गईं चीडशंकु, अविलीद और बिच्छुओं के साथ
ढाल पर फिसलती हुईं।
क्यों जल जोडता है और गिराता है
शक्ति देता है आत्महत्या के पथ पर,
क्यों वात सुखाती है और जमाती,
सूर्य गरमाता है और जलाता,

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पृथिवी सहारती है और दबाती,
क्यों तत्त्वसंकर बढता जाता है?
तथापि नये रूप आते हुए चिल्ला रहे
इस पंकिल रक्ती वसन्त में --
उनके शोकगीत कौन गायेगा
उनके घर हिमक्षेत्र में खोदेगा
जंगल के मैदान में आग बनाएगा?

पहाडी पर प्रकाश बिन्दु तारा नहीं
चरवाहा और पत्नी बात कर रहे है
यादें बांटते हुए
दोनों सौ दिन की गन्ध ओढे हुए हैं
माखन, स्वेद, मूत्र, अन्य रस
धरती का आर्द्र
कढी, ओषधी और धुआं
क्यों वह मिटा लें, जो था?
और शिविर मृदु श्वास ले रहा
क्या तुम अन्धेरे का रिरियाना सुन रहे हो
और बालों का त्वचा में अंकुरण?

जैसे रात्रि मीठे से अपनी चादर बना रही
न ऋक्ष और नाहीं भयावक शब्द
शरीर शान्त धरती पर लेटा हुआ,
क्यों मन तब आग्रही मांगता है नई यात्रा
उन पथ पर जहां हम पहले चले थे?
आग और वात
आप और मिट्टी
बहुत हैं हिमालय पर
परन्तु मन दौडता है प्राचीन छायाओं साथ,
विद्यालय और पिता
मित्र और माता
गाडी और वस्त्र,
और पहुचता है पर्वतीय आश्रम।

यह सचमुच व्यर्थ है,
हम आप हैं
हम आप है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(१९७७)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धागे

जब अनुभूति तर्क में बन्धे
निर्भाव की पीडा
डुबोती है
निर्भाव उपहासते हैं
अवयव जलते हैं
कोशिकाएं पिघलती हैं
अम्ल में।

हा क्या जलना था
अपनी ही आग में?

प्रश्न का उत्तर
दूसरे प्रश्न में है।

वही स्वप्न आये हैं,
दस वर्ष
वही बिम्ब बैठे,
वही भय दबाये,
निर्वाण कैसे हो?

योगिनी छज्जे पर बैठी
पथिकों को कहती सी
मैं अकेली हूं
दूरबोध से।
क्या मैंने सही सुना
चाय के अवशेष परखूं
चित्र दर्पण मे देखूं
छाया मापूं
लाख का मन्त्र पाठ
रोम पर करूं?
हां वह कामुक है
पर शीघ्र ऊब जायेगी।

एक निःशब्द चीख झंझोटती है
गांव के सूअर का प्रेत
धुंध में घुलता सा दीखता है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दौडता हूं कसाईक्षेत्र
और सूअर वहां है लकडी समान
पांव बंधे, मुंह दबा
उसकी चीखें आकाश फाडती,
चार लंगोटित लोग बहरे हैं
छुरी पैना रहे यह
घर के लिये मांस चाहते।

उस शाम को व्रत है
पर सूअर की आत्मा के बजाय
मेरे विचार भटकते हैं
और रुकते हैं आनन्द की पुत्री पर
मेरे मन्दिर पर षोडशी उपासिका
वह स्पर्श से स्फटिकमय है,
अतः मैं उसे रहस्य बतलाता हूं
अस्तित्व और शून्यता का।

मेरी चाह इतनी है
कि चाह ही इसकी पूर्ति है।

(१९७७)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक ताल, एक दर्पण

१
जैसे फूल की गिरती पंखडी
शाखा को लौटे
ऐसी थी तितली की उडान।
२
शरद की झंझानिल में
व्याघ्र और हरिण
साथ ठिठुरे।
३
मध्याह्न की गर्मी में
जल से भाप उठी,
पुराना संगीत
कान में गूंजा --
ताल ही दर्पण है।
४
झांझा अति पीडित
तितली नहीं बनेगा।
५
फुलवारी के शृंगार
और पक्षियों के कोलाहल के मध्य
देखो पीपल का धैर्य।
६
लगता है तरबूज़ को नहीं मालूम
रात तूफान आया।
७
चांद को देखते देखते
मेरी गर्दन दुखाई।

८
वसन्त का पहला गीत गाते
पक्षी शर्मीला लगता है।
९
कितने तीर्थ जाकर
आकाश गंगा

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उतनी ही दूर।
१०
यात्रयों के साथ
पक्षी भी डेरा डाले।
११
पुरुष बैठे करे ध्यान--
कठोर परिश्रम।
१२
डाकू साधूवेश में हैं
कवि ने
तलवार बान्धी है।
१३
मैं हंस से खेलने चला
पर उसकी उडान से
डर गया।

१४
चिडियाघर के पिंजरे
का भालू
मुझे भाई लगा।
१५
दर्पण में बिम्ब
धुंधलाता है।
१६
इस रात देर
मेरा साथ कौन जगा है?
१७
मैना ऐसे गाये
जैसे पिंजरे में है ही नहीं।
१८
विशैले छत्रक
सुन्दर लगते हैं।
१९
पक्षी की कूक सुनकर
जल में चन्द्रमा हिला।
२०
चन्द्रमा दौड रहा

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक मेघ से दूसरी ओर।

२१

अरुषी ने ओस के बिन्दु को
अंगुली में पकडना चाहा।

२२

सुन्दर है
पतझड की शाम का चन्द्र
जीवन की शाम में।

२३

तितलियां इधर उधर भाग रहीं
बीते वसन्त को ढूंढतीं।

२४

पाला और भीषण पडा
अब पुष्प नहीं खिलेंगे।

२५

काश गिरती बर्फ पर
तितलियां मंडरातीं
कैसा गातीं वह।

२६

चोर ने हार चुराया
पर चन्द्रमा मेरी खिडकी के बाहर
से नहीं भागा।

२७

मछलियां
गिरते फूलों के डर से
चट्टान नीचे छिप गईं।

२८

श्मशान में
बहुतेरी सुन्दरियों की अस्थियां हैं।

२९

गर्मी की रात
पिंजरे का कोई पक्षी
नहीं सोया।

३०

सुन्दर है
शरद चन्द्रमा

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर हमारी खिडकियां बन्द हैं।

३१

अरुषी बहुत रोई
पूर्ण चन्द्रमा के लिये।

३२

तूफान के झोंके पर बैठी
मन्दिर की घण्टी की आवाज़
चली आई।

३३

बिन जाने कैसे समझूं
ग्रन्थ मैं लौटाता हूं।

३४

पतंग पर किरणें हैं
जब ताल पर अंधेरा आ चुका।

३५

तूफान में कुत्ते
गिरते पत्तों पर भौंक रहे।

३६

प्रकाश
बिम्ब बिम्ब का प्रतिरूप
रूप रूप का प्रतिबिम्ब।

३७

सुन्दरता क्या निहारूं
वसन्त के पग
निरन्तर दूर हो रहे।

३८

कौवे शोर मचा रहे
कि कोकिला को सुन न पाएं।

३९

मां कि गोद में सुरक्षित
भिखारी बच्चे को क्या मालूम
ठंड कितनी है।

४०

चिडिया घोंसला बनाए
पेड पर, कैसे बताएं
पेड कटने वाला है।

४१

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उदास लगे पिंजरे का पक्षी
जब तितली देखे।

४२

जुगनू रोशनी दें
बच्चों को
जो उन्हें पकडें।

४३

नाग जल निर्मल है
पांव कैसे धोऊं।

४४

अनजान कि वसन्त जा रहा
तितली घास पर सोई।

४५

वह पास से निकला
पर सवेरे के कुहरे में
उसे पहचान न सका।

४६

हरिण स्तम्भित हुआ
उछलते बाघ की
भीषण सुन्दरता देख।

४७

आतिशबाज़ी बाद
दर्शक लौटे
अब वीराना है।

४८

मकडे जाल से
तितलियों के पंख
लटक रहे।

४९

उपवन में प्रत्येक पेड
का अपना नाम है।

५०

पतङ्ग धरती गिरा
निरीक्षण से जाना
आत्मा नहीं।

५१

मधुमक्खी बार बार

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

देवता की मूर्ति पर
वार कर रही।
५२
कितने मूर्ख हैं जो
इशारों का दाम करते हैं।
५३
गंगा की लहरों पर
चांद चित्र बना रहा।
५४
पक्षी हंस रहे
कि हमारे पास समय नहीं।
५५
चांदनी में सब वस्त्र
सुन्दर लगते हैं।
५६
खण्डहर में मैंने
कई फूल उगते पाए।
५७
रुई का फेरीवाला
गर्मी से पीडित।
५८
मेंढक पत्ते बैठ
कुल्या को पार किया।
५९
यदि पपीहा पौधा होता
लोग गीत काट लेते
रेशमी रुमालों
और पन्नों बीच
सुखाने के लिए।
६०
आज भी
सूर्यास्त हुआ
फुलवारी में
बेचारे तारे
शरद के चांद से
हारे।
६१

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तूफान के शोर में भी
चिडिया की पुकार आई।
६२
सर्दी की फुहार
मझे मिलने से पहले
फुलवारी हो आई।
६३
भुर्जतरु भीषण वर्षा में
सोए पडे।
६४
पपीहा कूक करे
पर कोई न आया।
६५
शाम हो चली
मेरी बेटी
चुपचाप रसोई में
खाना खा रही।
६६
कमल सुन्दर है
पर नाविक बहरा।
६७
कारागार के आंगन में भी
पुष्प खिले।
६८
मैं थक गया
क्या नींद में भी
पुष्प खिलेंगे।
६९
पूजा करते
पुष्प मुर्झाए।
७०
कोमल फूलों पर
वर्षा मूसल सी गिर रही।
७१
शरद की चांदनी में
मेरा बालक
गोद नहीं।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

७२
पडोसी की उंची दीवार
न वह देखे नदी
न दूर पहाडी।
७३
रात अंधेरे के तम्बू में
छिप गया ताल
पर हंस का स्वर
कोमल और श्वेत है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मन्दिर की सीढियां

१
मेरे समछाया के आंगन में
पपीहे ने पहला गान किया।
२
मालूम नहीं कहां से यह गीत
धरती पर गिर आया।
३
मचान से देखते
बाघ कितना सुन्दर लगता है।
४
तितली मेरे हाथों में
देखते देखते मर गयी।
५
देखो! पर्वत
कम्बल के नीचे सोया है।
६
पुष्प खिले
दूसरे दिन
हिमपात हुआ।
७
मैं फूलों को
चुनना नही चाहता
पर घर कैसे लौटूं
चुने बिना।
८
पता नहीं किन फूलों की
सुरभि फैल गई
आंगन में।
९
बादल कभी कभी
चान्द को ढक लेते हैं
ताकि हमारी निहारती आंखें
थक न जाएं।
१०
देखो इस पत्ते से गिरका

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जलबिन्दु
कैसे विभाजित हुआ।
११
पपीहे की चीख सुनकर
मुझे स्वर्गवासी दादा की
याद आई।
१२
चान्द की कितनी
समदृष्टि है।
१३
नववर्ष के उत्सव के लिये
मेरे पास नव वस्त्र कहां?
१४
ओठ ठिठुरते हैं
इन हवाओं में।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डरा पक्षी

कांपते, रात के तूफान में
बिजली की चौंध में
नष्ट नीड देख कर
वह लौटा घर निराश।

विश्व सिकुड गया था तब
कोई दूसरा नहीं
जो अपने जैसा रहा।
नहीं ढूंढना अब कोई।

भूमि बहुत अलग सी थी
रेत थी मकान थे
ध्रुव ऋतु समान सी
न धूप थी न चांदनी।

खिडकी में जब देखता
बन्धु उछल रहे
पंख भरते उडान
यह द्श्य गोच कर।

नल की फुहार बनी
उस की बरसात अब
सुदूर भूले देश में
रिमझिम पानी गिर रहा।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मिट्टी का अनुराग

देश प्रेम कहां से उभरता है?
हमारे कूचे कीचड वाले थे
और भय था
बाजार के गुंडे
पीट न लें।
चुप रहना सीखा
अज्ञात भीड में
पिघल जाना।

यह सच है --
पतझड की हवाएं
तीखी और सुहावनी थीं
और नदी के पास
उपवन में भागना
पहाडी से लुढकना
आनन्दमयी था।

पुरखों की कहानियां
रोमांचित थीं
उनसे जुडी हुईं
मैंने भी कई कथानक बुने।

पर अन्य देशों की भी
अपनी कहानियां हैं
सुन्दर घाटियां
पर्वतीय नदियां
सुन्दरियां।

अन्तर शायद है
बचपन में
मैंने देश की
मिट्टी खाई।

यह देश मोह नहीं
मिट्टी का अनुराग है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विस्मृति

क्योंकि विस्मृत हैं हम,
नया जन्म नहीं
हो सकता हमारा।
बंधे हैं हम
अतीत में,
अन्धे समान।

चिह्नप्राप्ति
जीवन का लक्ष्य
एकमात्र --
भक्ति,
याचना,
योग।
आतुरता,
पूर्ण होकर पीडा की,
मधु को चखकर
विष पीने की।

काल की
सूजन दी देखी है
हमने अभी,
अतीत भविष्य को
गर्भे समेटे,
प्रस्फुटित
हुआ नहीं।

इसका जन्म
मायावी होगा
इसका शोषण है
स्मृतिधारा
ऊर्जा है

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

स्वरों की झंकार।

पर यह यायावर मन
इन्द्रजाल की
भूलभुलैया में
भटक गया
विस्मृति की प्रतिगूंज
सुनकर
सम्मोहित।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सोता चरागाह

दोपहर की
तपतपाती धूप में,
सोते चरागाह में,
जन्तु
पेड की छाया में
फैले हुए थे,
मधुमक्खियां ही
तल्लीन थीं
फूलों के ऊपर।

सामान्यता का रेशमी आवरण
ढके था
इन्द्रियों को
भ्रमों से।

उस तपन में
चाह उठी
निशब्दता की
पत्थरों की
बिन कहानी
जो बतायेंगे
धरा में
कितनी गर्मी है।

उस फटे आकाश में
न मृत्यु थी
न पानी
घर से पहुंचकर
दूर
एक आलोक में थे
जहां से वापस निकलकर
आना मना है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com